शंकराचार्य और इस्लाम

डॉ. मकसूद आलम

शंकराचार्य का सबसे बड़ा महत्व यह है कि उन्होंने हिन्दुत्व को पौराणिक धर्म से मोड़कर उपनिशदों की ओर उन्मुख कर दिया। जैसे गीता ने बीसवीं सदी में आकर लोकमान्य तिलक के हाथों नवीनता प्राप्त की, वैसे ही शंकराचार्य के हाथों, उपनिषदों की शिक्षा नवीन हो गई। उन्होंने अपने सारे ग्रन्थ इस भाव से लिखा कि मनुष्य को ब्रह्म का सान्निध्य प्राप्त करने का मार्ग स्पष्ट दिखाई पड़े। उनका दूसरा महत्व यह भी है कि अद्वैत को प्रमुखता देते हुए भी उनहोंने विष्णु, शिव, शक्ति और सूर्य पर स्तोत्र लिखे, जिससे हिन्दूत्व में समन्वय लाने का उनका आग्रह प्रकट होता है। वे आध्यात्मिक सुधारक और सन्त थे एवं शाक्त मन्दिरों में बलि देने की प्रथा का उन्होंने अनेक स्थानों पर विरोध किया था। बौद्ध संघों के अनुकरण पर उन्होंने सन्यासियों के संघ स्थापित किए तथा भारत की भौगोलिक एकता को प्रत्यक्ष करने के निमित्त देश की चार दिशाओं में उन्होंने चार पीठ भी बसाए, जो बदरिकाश्रम, द्वारका, जगन्नाथपुरी और श्रृंगेरी में अवस्थित हैं तथा जहाँ जाने की धार्मिक अभिलाषा प्रत्येक हिन्दू के मन में रहती आई है।